प्रात:क्लास 17-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बेठसमझाते हैं। रूहानी बाप कोदाता कहा जाता है। वह आपे ही सभी कुछ बच्चों को देते हैं। आते ही हैं विश्व का मालिक बनाने। कैसे बनना है यह बच्चों को सभी समझाते डायरेक्शन देते रहते हैं। दाता है तो सभी आपे ही देते रहते हैं। मांगने से मरना भला। कोई भी चीज़ मांगनी नहीं होती है। शक्ति, कृपा आशीर्वाद कई बच्चे मांगते हैं। भक्ति मार्ग में मांगते माथा भटकाये 2 सारी सीढ़ी उतरते आये हैं। अभी मांगने की कोई दरकार नहीं। बाप कहते हैं डायरेक्शन पर सारी चलो। एक तो कहते हैं बीती को कब चितवो नहीं। ड्रामा में जोकुछहुआ पास्ट हो गया। उनका विचार न करो। रीपिट न करो। बाप तो सिर्फ दो अक्षर ही कहते हैं मामेकं याद करो। बाप डायरेक्शन अथवा श्रीमत देते हैं। उन पर चलना बच्चों का काम है। यह है सब से श्रेष्ठ डायरेक्शन। कोई कितने भी प्रश्न आद करेंगे बाप तो दो अक्षर में ही समझायेंगे। मैं हूं पतित-पावन। तुम मुझे याद करते रहो तो तुम्हारे पाप भस्म होजायेंगे। बस। बाप को याद करना है। याद के लिए कोई डायरेक्शन दिया जाता है क्या। बाप को याद करना है। कोई रट्टी दाका नहीं। अन्दर में सिर्फ बेहद के बाप को याद करना है। दूसरा डायरेक्शन क्या देते हैं 84 के चक्र को, याद करो। दैवीगुण धारण करो। क्योंकि तुमको देवता बनना है। देवताओं की महिमा तो तुम ने आधा कल्प की है।-(बच्चों का आवाज़ हुआ)

"अभी यह डायरेक्शन सभी सेन्टर वालों को दिये जाते हैं कि बच्चों को कोई भी न ले आवे। कोई प्रबन्ध करना है उन्हों का। बाप से जिनको वर्सा लेना होगा वह आपे ही प्रबन्ध करेंगे। यह रूहानी बाप की युनिवर्सिटी है इसमें छोटे बच्चों की दरकार नहीं। ब्राह्मणियों का काम है सर्विस रबुल लायक जब बनेतबउनको रिफ्रेश करने ले आना है। कोई भी गल्त हुआ आदमी हो वा छोटा हो। यह है युनिवर्सिटी। यहां बच्चों को ले आते हैं, यह नहीं समझते हैं कि युनिवर्सिटी है। समझते हैं दादा ममा-बहन माई है। यहां तो मुख्य बात है यह युनिवर्सिटी है। इसमें पढ़ने वाले बड़े अच्छे समझदार चाहिए। कच्चे भी डिसट रबन्स करेंगे। क्योंकि बाप बाप की याद में नहीं होंगे। तो बुधि इधर-उधर भटकती रहेंगी। नुकसान कर देंगे। [illegible] से ही यहां ऐसे बचत वाले याद में रह न सके। पहले से उन बचत वालों के विघ्न बहुत हैं फिर और ही एडीशन होंगे। इसमें बच्चों को ही नुकसान है। कोई तो जानते ही नहीं कि यह गाड फादरली युनिवर्सिटी है। यहां तो मनु से देवतायनना होता है। बाप कहते हैं भल गृहस्थ व्यवहार में, बाल-बच्चों साथ रहो, सिर्फ एक हफ्तातो क्या 3-4 रोज भी काफी है। नालेज तो बहुत सहज है। बाप कोपहचानना है। बेहद के बाप को पहचानने से बेहद का वर्सा मिलेगा। कौन सा वर्सा? बेहद की बादशाही। ऐसे मत समझो प्रदर्शनी अथवा म्युजियम आद में सर्विस नहीं होती है। ढेर अनगिनत प्रजा बनती है। ब्राह्मण कुल सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी तीनों यहां स्थापन होती है। तो यह बहुत बड़ी युनिवर्सिटी है। बेहद का बाप पढ़ाते हैं, एकदम दिमाग ही पूर हो जाना चाहिए। परन्तु बाप हैं साधारण तन में। पढ़ाई भी साधारण रीति है। कोई टेनुल कुर्सियां, कोच आद तो नहीं है। इसलिए मनुष्यों को जंचता नहीं है। गाडफादरली युनिवर्सिटी [illegible] होगी। बाप कहते हैं मैं हूं गरीब निवाज़। गरीबों को ही पढ़ाता हूं। शाहुकारों को ताकत ही नहीं पढ़ने की। उन की बुधि में तो महल माडियां रहती है। गरीब ही यहां शाहुकार बनते हैं। शाहुकार गरीब बनेंगे। यह असम्भव है। दान कब शाहुकारों को दिया जाता है क्या। यह भी अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान है। शाहुकार दान ले नहीं सकते। बुधि में बैठेगा [illegible] नहीं। वह अपने हद के रचना धन-दौलत आद में ही फंसे रहते हैं। उनके लिए तो यहां ही जैसे स्वर्ग है। [illegible] हमको दूसरे स्वर्ग की दरकार ही नहीं। कोई बड़ा आदमी मरे तो भी कहेंगे यह स्वर्ग पधारा। [illegible] कह देते हैं स्वर्ग पधारा। तो जरूर अभी नर्क में उतरे ना। परन्तु इतने [illegible] बुधि हैं जो समझते नहीं [illegible] स्वर्ग क्या है। कुछ नहीं जानते। तुम्हारी यह [illegible] कितनी बड़ी युनिवर्सिटी है। बाप कहते हैं जिनकी [illegible] [illegible] को ही आकर पढ़ाता हूं। बाप [illegible] जब आप [illegible] सन्यासी उदासी [illegible]

मी को ताला लगा हुआ है। बाप खुद आपके दरवाजा देते हैं कि तुम्हारे बोध का ताला कैसे खुलेगा। बापसे
कुछ भी मांगना नहीं है। इसमें निश्चय चाहिए। कितना मोस्ट बिलवेड बाबा है। जिसको भक्ति मार्ग में याद करते
। जिसको याद करते हैं तो जरूर कब आयेंगे भी ना। याद करते ही हैं फिर से रिफ्रेश होने के लिए। आकर
बच्चों को ही समझाते हैं। बच्चों को फिर अ बाहर वालों को समझाना है कि कैसे बाबा आया हुआ है क्या कह
। बाप कहते हैं बच्चे तुम सभी पतित हो। मैं ही आकर तुमको पावन बनाता हूं। तुम आत्मा जो पतित बने
हो, अभी सिर्फ मुझ पतित पावन बाप को याद करो। मुझ सुप्रीम आत्मा को याद करो। इसमें
कुछ भी मांगने की दरकार नहीं। तुम ने भक्ति मार्ग में आधा कल्प मांगा ही मांगा है। मिला कुछ भी
नहीं। अभी मांगना बन्द करो। हम आपे ही तुमको देता हूंगा। बाप का बनने से वर्सा तो जरूर मिलेगा ही।
तो बच्चे वह तो झट बाप के वर्से को समझ जाते हैं। बाप का वर्सा है ही स्वर्ग की बादशाही 21
पीढ़ी। यह तो तुम जानते हो जब नर्कवासी हैं तो ईश्वर अर्थ दान-पुण्य आदि करने से अल्पकाल के लिए
सुख मिलता है। जिसको काग विष्टा समान सुख कहते हैं। सन्यासियों को तुम कहो बेहद का वर्सा लो तो कब
मानेंगे नहीं। कहेंगे सुख तो काग विष्टा समान है। सभी नर्क में गोते खाते रहते हैं। आजकल तो गृहस्थ
को काम करने लिए बहुत युक्तियां रचते हैं। अभी बाप कहते हैं इन जंजीरों से निकलो। तुम इन निवृत्ति मार्ग
वालों के फालोअर्स क्यों बने हो। परन्तु यह तो जानते हैं फिर भी तुम बनेंगे जरूर। चलो तो कोई करते ही न
सभी है झूठ ही झूठ। कैसे कमाने की कितनी युक्ति रचते हैं। मनुष्य धर्माऊ भी निकालते हैं। असल्ल यह के
व्यापारी लोग निकालते हैं। जो व्यापारी होंगे वह कहेंगे हम बाप से व्यापार करने आये हैं। बच्चे बाप से
व्यापार करते हैं। बाप की प्राप्ती सेवा फिर इन से श्राप आदि दिलाते हैं। दान-पुण्य आदि करते हैं। धर्मी
मंदिर आदि बनाते हैं। तो उस पर बाप का ही नाम रहेगा। क्योंकि जिससे प्राप्ती मिली उनके लिए तो जरूर
करना चाहिए ना। वह भी सौदा हो गया ना। वह है सभी जिसमानी बातें। अभी बाप कहते हैं बीती को
चितवो नहीं। उल्टी सुल्टी कोई भी बात सुनो ही नहीं। कोई उल्टी सुल्टी प्रश्न पूछे बोलो इन बातों में ज
की दरकार ही नहीं। तुम पहले बाप को तो याद करो। भारत का प्राचीन राजयोग नामी-ग्रामी है। जितना
याद करेंगे देवी गुण धारण करेंगे उतना ही ऊंच पद पायेंगे। यह है युनिवर्सिटी। एमआब्जेक्ट क्लीयर है। पु
पार्थ कर ऐसा बनना है। देवी गुण धारण करनी है। किसको दुःख नहीं देना है। कोई भी प्रकार का दुःख
हर्ता सुख कर्ता बाप के बच्चे हैं ना। सो तो सर्विस से ही मालूम पड़ेगा। बहुत2 नये2 भी आते हैं 20-25
वर्ष वालों सेगी 10-20 दिन वाले तीखे हो जाते हैं। तुम बच्चों को फिर आ समान बनाना है। जब तक
ब्राह्मण न बने हो तो देवता कैसे बनेंगे। ग्रेट2 ग्रेन्ड फादर तो ब्रह्मा है ना। जा होकर जाते हैं उनको
गासन करते हैं। फिर जरूर वह आयेंगे। जो भी त्योहार आदि गाये जाते हैं सभी होकर गये हैं। फिर होंगे।
इस समय सभी त्योहार आदि हो रहे हैं। रक्षा बन्धन आदि.... सभी का राज़ बापसमझाते रहते हैं। यह
बच्चे को जरूर पावन बनने चाहिए। पावन बाप को बुलाया है तो बाप रास्ता बताते हैं। कल्प2 जिसने
जैसे जो वर्सा लिया था वही स्क्युरेट चलती रहती है। तुम भी साक्षी होकर देखते हो। बाप दादा भी स
हो देखते हैं। यह कहां तक ऊंच पद पा सकते हैं। उनके टीचर्स को तो मालूम रहे
ना। कितने को आप समान बनाते हैं। कितना समय याद में रहते हैं। सभी मालूम पड़ जाता है। यह
बड़ी बेहद की युनिवर्सिटी है। पहले तो यह बुद्धि में रखना चाहिए। यह गाडली युनिवर्सिटी है। गाडली
वर्ल्ड युनिवर्सिटी नहीं। गाडली युनिवर्सिटी है। युनिवर्सिटी है ही नालेज के लिए। वह है मनुष्य के लि
हद की युनिवर्सिटी। यह तो है बेहद की युनिवर्सिटी है। दुर्गति से सद्गति में ले जाने वाला हेल को
बनाने वाला। इनको तो सभी आत्माओं के तरफ दृष्टि जाती होगी। सभी का कल्याण करना है। सभी को

जाना है। न सिर्फ तुमकोपरन्तु ये वर्ल्ड की आत्माओं को याद करते होंगे। उस में भी पढ़ते हैं बच्चों को। भी समझते हो जैसे नम्बरवार जो आये हैं वह फिर आवेंगे भी ऐसे। सभी आत्मायें नम्बरवार ही आती हैं। आवेंगी भी नम्बरवार। तुम भी नम्बरवार कैसे आवेंगे यह सभी समझाया जाता है। इसमें भी भेद की बात आ जाती है। सभी को जाना है जरूर। कैसे जावेंगे क्या करेंगे इसमें हम क्यों माथा मारें। कल्प पहले जैसे हुआ था वही होगा। सारी सृष्टि का उधार तो होता है ना। पुरानी दुनिया से नई बनती है। यह भी तुमको समझाया जाता है। तुम फिर कैसे नई दुनिया में आवेंगे नम्बरवार। जो नई दुनिया में आने वाले हैं उनको ही समझाया जाता है। बाप को जानने से अपने धर्म को और सभी धर्मों के सारे झाड़ को विश्व को तुम जान जाते हो। बाप नालेजफुल है। तुमको भी बैठ सुनाते हैं। इसमें कुछ भी मांगने की दरकार नहीं। आशीर्वाद भी नहीं। लिखते हैं बाबा दया करो। कृपा करो। बाप तो कुछ भी नहीं करेंगे। बाप आया ही है जब रास्ता बताने। ऐसे छी छी दुनिया में तो 3-4 रोज ही आना चाहिए। परन्तु पत्थर बुद्धियों से कितना माथा मारना पड़ता है। कितने पतित हैं। ड्रामा में पार्ट ही मेरा है सभी को पावन बनाने का। ऐसे ही पार्ट बजाता हूं जैसे कल्प2 बनाया है। जो पार्ट हुआ अच्छा या बुरा हुआ वैसा था। चिन्तन कोई भी बात का नहीं करना है। हम आगे बढ़ते रहते हैं। यह बेहद का ड्रामा है ना। सारा चक्र पूरा होकर फिर नई फिर चलेगा। जो जैसा पुरुषार्थ करते हैं वैसा पद पा लेते हैं। मांगने की दरकार ही नहीं। भक्ति-मार्ग में तुम ने अपार मांगा है। तुमको अल्फ बाप का सुख मिला है। सीढ़ी नीचे ही उतरते आये हैं। सभी पैसे खलास कर दिये हैं। यह भी ड्रामा में सारा बना हुआ है। यह सिर्फ समझाते हैं आत्मा कल्प पहले कैसे शास्त्र बनाते कितना खर्चा होता है। अभी तो तुमको कुछ भी खर्चा करने की दरकार ही नहीं। दान तो दाता के आगे। दाता को दरकार नहीं है। वह तो आये ही हैं देने लिए। ऐसे मत समझो शिव बाबा को हमने दिया है। और दिव्य बाबा भी तो बहुत2 मिलता है ना। टीचर के पास स्टुडन्ट लेने लिए आते हैं ना। गुरु से भी लेने आते हैं। उस लौकिक बाप टीचर गुरु से तुम ने घाटा ही पाया। अभी बच्चों को श्रीमत पर चलना है। तब ही हम ऊंच पद पा सकते हैं। यह शिव बाबा के डबल श्री श्री। तुम तो बनते हो सिंगल श्री। श्री ल० श्री ना० कहा जाता है ना। श्री ल० श्री ना० को ही गये। विष्णु को श्री2 कहेंगे क्यों कि जोड़ी है। फिर भी दोनों को बनाते कौन हैं। तो एक श्री श्री है। कभी श्री श्री तो कोई होते ही नहीं। आजकल तो श्री लक्ष्मी नारायण श्री राम सीता, सीताराम नाम भी रखाते रहते हैं। तो बच्चों को यह धारण करना है बहुत खुशी में रहना है। बेहद का बाप मिला बाकी क्या। यह है कालेज युनिवर्सिटी। स्प्रीचुअल फादर कालेज भी आजकल होती रहती है परन्तु स्प्रीचुअल फादर नहीं समझते। कालेज तो सिवाय एक बाप के कोई दे न सके। बाप सभी रूहों का बाप है ना। उनको स्प्रीचुअल कहते हैं। स्प्रीचुअल कालेज जरूर बाप ही देंगे। फिलासफी को भी स्प्रीचुअल कह देते हैं। क्या तो तुम समझते हो ... है। मेनत में कौन रहते हैं? डाक्टर। मेडिसिन को भी बहुत हाईडाल लगाते रहते हैं। डाक्टर ही डाकू है। बहुत ... तो उनको क्या कहें। बाप ने तो कहा है यह कोसघर है। हिंसा ही हिंसा होती है। अहिंसा परमोधर्म देवी देवता धर्म गाया जाता है। मार-पीट आदि की बात नहीं। गुस्सा करना भी हिंसा ही कहा है। फिर तेरी हिंसा को कुछ भी करो। ... बिल्कुल अहिंसक बनना है। कोई भी मनसा वाचा कर्मणा खराब बात न होनी चाहिए। बच्चों को अपने उपर ... मालूम रखनी है। अच्छा आज पार्टी जाने वाली है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।

मेरे बच्चे कहे मूं2 कर केकड़े को आप समान बनाती है। तुम भी ऐसे हो। तुम मूं2 करके हो तो पर आ जाते हो। तुम उड़ जाते हो। दृष्टान्त यहां का है। तुम ब्राह्मणी यह भी ... हो। केकड़ों को ज्ञान योग की मूं2 करते हो। कमाल है ना। एक कीड़े को आप समान देवता बनाने वाले हैं। तो बाप कहते हैं सभी तरफ से छोड़ योग टटोकरके को याद करो। राजाई को याद करो। और कोई भी पार पहुंच नहीं सकते। ओम।